शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 जुलाई 2014

कर्मभूमि उपन्यास में सत्याग्रही पात्र

ज्योति द्विवेदी
भाषा अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

सत्याग्रह का विचार महात्मा गाँधी के चिन्तन का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है। दक्षिण अफ्रीका में रहकर महात्मा गाँधी ने सत्याग्रह शब्द का व्यवहारिक प्रयोग किया। जब वे 1915 में भारत वापस आये तब उन्होंने सत्याग्रह शास्त्र में दृष्टि की और इसे आजादी के शस्त्र के रूप में अपनाया। सन् 1920 से लेकर 1948 तक उनके चिन्तन और कार्य करने के सभी प्रकार के परिवेश पर गहरा असर हुआ। सत्याग्रह के रूप में अहिंसा की शक्ति को संगठित करके उसका प्रयोग सामाजिक व्यवसस्थाओं में परिवर्तन और परिवर्धन के लिए अथवा नए समाज की रचना के लिए करने की सम्भावनों को प्रकाश में लाकर गाँधीजी ने मानव जाति के भावी विकास की दिशा में संकेत करने वाली महत्तवपूर्ण सूचनाओं को उद्घाटित किया है तथा अहिंसा पर आधारित एक सम्पूर्ण सुव्यवस्थित और न्यायपूर्ण समाज व्यवस्था की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया है। साहित्यिक क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास साहित्य में महात्मा गांधी के विचार परिलक्षित होते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में ऐसे पात्रों में सत्याग्रही दृष्टि का अध्ययन किया गया है।

सत्याग्रह का विकास

सत्याग्रह का विकास दक्षिण अफ्रीका में यहूदियों की उस नाटक शाला में हिन्दुस्तानियों की सभा में हुई। उनमें एक वक्ता सेठ हाजी हबीब थे। वे भी दक्षिण अफ्रीका के बहुत पुराने और अनुभवी निवासी थे। उनका भाषण बड़ा जोशीला था। आवेश में आकर वे यहां तक बोल गये कि - "यह प्रस्ताव हमें खुदा को हाजिर मान कर पास करना चाहिए। हम नामर्द बनकर ऐसे कानून के सामने कभी न झुकें। इसलिए मैं खुदा की कसम खा कर कहता हूँ कि इस कानून के सामने मैं कभी सिर नहीं झुकाऊँगा। मैं इस सभा में आये हुए सब लोगों को यह सलाह देता हूं कि वे भी खुदा को हाजिर मानकर ऐसी कसम खाये।"1

उस समय इस कौम व आन्दोलन को "पैसिव रेजिस्टेन्स" का नाम दिया था। परन्तु यह नाम जनता को पूरी तरह से समझ में न आने के कारण इस संग्राम के लिए उत्तम शब्द खोज निकालने के लिए " इंडियन ओपीनियन" ने एक छोटे से इनाम की घोषणा की जिसमें गाँधीजी ने भी भाग लिया।

उन्होंने सदाग्रह नाम भेजा यह नाम सभी को पसंद आया तथा इसी सदाग्रह से सत्याग्रह की उत्पत्ति होती है। सत्य के भीतर शांति का समावेश मानकर और किसी भी वस्तु का आग्रह करने से उसमें बल उत्पन्न होता है। इसलिए आग्रह में बल का समावेश करके मैंने भारतीयों के इस आन्दोलन को सत्याग्रह नाम दिया।

जिसका वास्तविक अर्थ है - "सत्य और शांति से उत्पन्न होने वाला बल।"

महात्मा गांधी ने सत्याग्रह शब्द के आस-पास अट्ठारह रचनात्मक कार्यक्रमों का ताना-बाना बुना। सत्याग्रह में धरना, हड़ताल, विदेशी वस्त्रों की होली जलाना और अन्य आंदोलन अहिंसक तरीके से करना शामिल हैं, परन्तु लोगों के हाथों में विधायक कार्यक्रम के रूप में खादी ग्रामोद्योग, अस्पृश्यता निवारण, शराब बंदी, नयी तालीम (शिक्षा) कौमी एकता को भी महत्व दिया।

प्रेमचंद ने अपने उपन्यास कर्मभूमि में महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों को विभिन्न पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्ति मिली है।

मुंशी प्रेमचंद का व्यक्तित्व और कृतित्व

हिन्दुस्तान की नई राष्ट्रीय और जनवासी चेतना के प्रतिनिधि साहित्यकार मुंशी प्रेमचंद का जन्म बनारस के पास लमही में 1880 में एक किसान परिवार में हुआ। बहुत से गरीब किसानों की तरह उनके पिता का गुजारा किसानी से न हुआ और उन्होंने नौकरी कर ली। "सौतेली माँ का व्यवहार, बचपन में शादी, पंडे पुरोहित का कर्म कांड, किसानों और क्लर्कों का दुखी जीवन यह सब प्रेमचंद ने सोलह की उम्र में ही देख लिया था। इसीलिए उनके ये अनुभव एक जबर्दस्त सच्चाई लिए हुए उनके कथा साहित्य में झलक उठे।"2

प्रेमचंद ने अपना साहित्यिक जीवन एक उपन्यासकार और आलोचक की हैसियत से शुरू किया था। कर्मभूमि, रंगभूमि, सेवासदन निर्मला और गोदान आदि इनके उपन्यास हैं। 1907 में इनका पहला कहानी संग्रह "सोजे वतन" प्रकाशित हुई। इस कहानी संग्रह की पाँच कहानियों से अंग्रेज शासक घबरा गये 1910 में जब्त कर ली गयी। प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय था पर वह नवाबराय के नाम से लिखना शुरू किया परन्तु बाद में उन्होंने नवाबराय नाम छोड़कर प्रेमचंद नाम से लिखने लगे। प्रेमचंद ने उपन्यास लेखन के साथ-साथ जमाना, जागरण, माधुरी, मर्यादा, हंस आदि पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। प्रेमचंद नौजवानों के लेखक थे, नई पीढ़ी के लेखक थे। वह साहित्य के सौदागरों से दूर रहते थे। दिखावे और प्रदर्शन से घृणा थी। तमाम कठिनाईयों और बाधाओं को पार करती हुइ भारतीय जनता से प्रेमचंद कहते हैं - "यह अंत नहीं है और आगे बढ़ो और आगे बढ़ो जब कि रंगभूमि में विजय न हो जब तक कि देश का कायाकल्प न हो, जब तक कि इस कर्मभूमि में गबन और गोदान के होरी और रमानाथ का त्रस्त होना बंद न हो और हमारा देश एक नई तरह का सेवासदन एक नई तरह का प्रेमाश्रम न बन जाए।"3

कर्मभूमि उपन्यास के सत्याग्रही पात्र

महात्मा गांधी "सत्याग्रह" को अन्याय के प्रतिक का शक्तिशाली और सर्वोत्तम साधन मानते थे। मुंशी प्रेमचंद भी महात्मा गांधी के विचारों से अधिक प्रभावित थे। अतः उनके प्रारंभिक उपन्यास आदर्शोन्मुख पर आधारित थे। प्रेमचंद का प्रथम उपन्यास कर्मभूमि है। "कर्मभूमि" स्वाधीनता संग्राम के उस दौर का उपन्यास है जब लोग अंग्रेजों का मनमाना अत्याचार सहने के लिए कतई तैयार न थे। भारतीय जनता ने अंग्रेजों के अन्याय और अत्याचार का प्रतिकर करना शुरू कर दिया था। प्रेमचंद ने कर्मभूमि में पहली बार मजदूरों और विद्यार्थियों को एक साथ अंग्रेजों का मुकाबला करते दिखाया है। कर्मभूमि के पात्र गांधीजी के द्वारा रचनात्मक 18 कार्यक्रम की पद्धति को अपनाते हुए अहिंसक रूप्

चित्रित किया गया है। जिसका प्रमुख पात्र अमरकान्त है जो जाति-पाति व छुआ-छूत को नहीं मानता है। चरखा चला कर गांधीजी के सत्याग्रह को स्थापित करता है, और नशा मुक्ति, लगान बंदी आंदोलन जैसे कार्यक्रम का निर्माण करता है। काले खां को चोरी न करने तथा परिश्रम करने की शिक्षा देता है। सुखदा और मुन्नी भी अहिंसक रूप को अपनाती है। सुखता अछूतों के लिए मंदिर के द्वारा खुलवाने के लिए हड़ताल व धरना करती है तथा मुन्नी भी गाँव के लोगों को मरी गाय का मांस खाने से रोकते हुए कहती है - "मेरा ही मांस खा जाओगे तो कौर हरज है ? यह भी तो मांस ही है।" डॉ.शांतिकुमार, समरकान्त व काले खां का हृदय परिवर्तन होता है। महात्मा गांधी का सिद्धान्त हृदय परिवर्तन पर आधारित है। वे जोर जबरजस्ती के पक्ष में नहीं है।

कर्मभूमि हिन्दुस्तान के स्वाधीनता आंदोलन के गहराई और प्रसार का उपन्यास है। यह आंदोलन एक जबरदस्त सैलाब की तरह तमाम जनता को अपने अंदर समेट लेता है। महात्मा गाँधी द्वारा रचनात्मक अट्ठारह कार्यक्रम धरना, हड़ताल, विदेशी वस्त्रों की होली जलाना और अन्य आन्दोलन अहिंसक तरीके को

पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। अमरकान्त जो एक अहिंसक पात्र हैं जो इस उपन्यास का प्रमुख नायक है कथा के आदि से अन्त तक वह कथा में दिखाई देता है। अमरकांत महाजन लाला समरकांत का बेटा है। राष्ट्रीय का बेटा है। राष्ट्रीय आंदोलन के प्रभाव से समाज सेवा के कामों में भाग लेता है। पिता और पत्नी का कदम-कदम पर विरोध करता है। घर से झगड़ा करता है और एक गाँव में जाकर किसानों का संगठन करता है। जब अमरकान्त स्कूल से लौटकर आता है तो वे अपनी छोटी कोठरी में जाकर चरखे पर बैठ जाता है। पिता के द्वारा इसका विरोध करने पर। अमरकान्त ने गर्व से कहा -"चरखा रूपये के लिए नहीं चलाया जाता और किस लिए चलाया जाता है।"

"यह आत्म शुद्धि का एक साधन है।"4

इस चरखे के द्वारा अमरकान्त ने महात्मा गांधी के सत्याग्रह शब्द को स्थापित किया है। विद्यार्थी जीवन में अमरकांत अपने दोस्त सलीम के साथ गाँवों की आर्थिक दशा का अध्ययन करने जाता है। उनकी गरीबी देखकर उनकी आँखों में आंसू आ जाते हैं और उसके राष्ट्रीय विचार और दृढ़ हो जाते हैं। उसे ताज्जुब होता है कि अमलों और महाजनों को उन पर दया नहीं आती। प्रोफेसर शांति कुमार जवाब देते हैं - "दया और धर्म की बहुत दिनों परीक्षा हुई और यह दोनों हल्के पड़े। अब तो न्याय परीक्षा का युग है।"5

अमरकान्त जब देहातों का चक्कर लगाता है तो वह शांति पूर्ण जीवन के लिए एक देहात में जाता है जहां के ग्रामीणों पर हो रहे अत्याचार को देख कर उसका खून खौल उठता है घोर अन्याय का राज्य था और अमरकान्त की आत्म इस राज्य के विरूद्ध झंडा उठाए फिरती थी। एक दिन संध्या के समय अमरकान्त ने एक बुढ़िया से पूछा क्यों माता, यहां परदेशी को रातभर रहने का ठिकाना मिल जाएगा ? बुढ़िया बताती हैं कि इस गाँव में रैदास रहते हैं।

यह सुनकर अमरकान्त ने नम्रता से कहा - "मैं जात पांत नहीं मानता, माताजी! जो सच्चा है, वह चमार भी हो तो आदर के योग्य है, जो दगाबाज

झूठा, लंपट हो वह ब्राह्मण भी हो तो आदर योग्न नहीं।"6

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि अमरकांत जाति-पांति, छुआ-छूत को नहीं मानता। यहां तक कि काले खां के द्वारा लाये चोरी के माल को भी लेने से मना करता है तथा शराब से घृणा करते हुए, वह उसे चोरी न करने तथा मेहनत कर धन कमाने की शिक्षा देता है। सुखदा अमरकान्त की पत्नी है। सुखदा के शब्दों में प्रेमचंद ने अपने उपन्यास में हिन्दुस्तानी स्त्रियों के चरित्र की विशेषता को पकट किया है। अन्यायी को दंड मिलने पर ऐसा हर्ष वे ही प्रकट कर सकती थी, इसलिए कि गुलामी और अन्याय का बोझ पुरूषों से ज्यादा उन्हें सहना पड़ता है। जब अमरकान्त और उनके साथी एक दूसरे की पीठ ठोंकते हुए गोरों पर फतह पाकर लौटे थे तब सुखदा ने ही अमरकांत से उस स्त्री के बारे में पूछा था, जिसके साथ गोरों ने बलात्कार किया था। अमरकांत और उसके साथियों ने उसकी कोई खबर न ली थी। तब सुखदा उसे डांटकर कहती है - "एक दिन जाकर सब कोई उसका पता क्यों नहीं लगाते, या स्पीच देकर ही अपने कर्तव्य से मुक्त हो गए।"7 सुखदा महात्मा गांधी के सत्याग्रह के मार्ग पर चलते हुए हड़ताल और अहिंसक कार्य को अपनाती है। जब मंदिर में अछूतों के प्रवेश की बात पर गोलियाँ चलने लगती है, तब भी वह निश्चल खड़ी रहती है। उसमें एक अद्भुत कर्मठता है जिससे वह भारी से भारी हड़ताल की योजना कर लेती है।

इस तरह से वह अछूतों के लिए मंदिर के द्वारा खुलाने में सफल होती है। सुखदा की तरह मुन्नी भी एक अहिंसक पात्र के रूप में हमारे सामने चित्रित हुई गोरों द्वारा अपमानित किये जाने पर वह उनसे बदला लेने के लिए उन पर आक्रमण करती है। पर वह पुलिस के द्वारा पकड़ी जाती है। जज के सामने अपने बयान में मुन्नी कहती है - "जो सदा दुःख भोग करते हैं और रोटियों को तरसते हैं, उन्हें जीवन से कुछ कम प्यार नहीं होता।"8

मुन्नी भी अपने जीवन को जीना चाहती है एक सुखी, समृद्ध जीवन, कर्म और आनंद का जीवन। अतः मुन्नी अपने पति के साथ वापस घर जाने को मना कर देती है। इसका कारण यह है कि उसका पति ऊँची जाति का है और वह जाति प्रथा से पैदा होने वाले कुसंस्कार और भय है। अतः मुन्नी चमारों के गाँव में रहने लगती है और उसे उतना सुख मिलता है जितना पहले कभी न मिला था। इसका कारण यह है कि इन "नीच" जाति के गरीब किसानों और खेत मजदूरों में जाति प्रथा के वे बंधन नहीं है, जो "ऊँची" जातिवालों में पाए जाते हैं। उनका एक दूसरे के प्रति हमदर्दी और भाईचारा अधिक है। इस प्रकार मुन्नी अपने जीवन को एक नये सिरे से शुरू करती है।

निष्कर्ष

सत्याग्रह सामाजिक जीवन में विद्यमान अवांछनीयताओं अथवा अन्याय और अत्याचारों के विरोध की अहिंसक पद्धति है। इसे सामाजिक जीवन में अनेकानेक रूपों में चलित असत्य और हिंसा के निवारण की सत्य और अहिंसा पर आधारि तपद्धति भी कहा जा सकता है। सत्याग्रह का प्रयोग करके समाज में पनप रहे अन्याय और अत्याचारों को असत्य मानते हुए इनका नैतिक उपयों द्वारा विरोध किया जा सकता है।

सत्याग्रह का अर्थ स्पष्ट करते हुए गांधीजी ने कहा है कि - ''स्वयं कष्ट भोगना और अन्याय का विरोध करना ही सत्याग्रह है।''9

संदर्भ ग्रन्थ

1.कर्मभूमि उपन्यास, प्रेमचंद, जनशिक्षण संस्थान - दिल्ली

2.सत्याग्रह, गांधीजी

3.दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास, गांधीजी, नवजीवन प्रकाशन मंदिर-अहमदाबाद

4. कर्मभूमि, प्रेमचंद

5. कर्मभूमि, प्रेमचंद

6. कर्मभूमि, प्रेमचंद

7. कर्मभूमि, प्रेमचंद

8. कर्मभूमि, प्रेमचंद

9.हिन्दी का गद्य साहित्य, डॉ.रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पंचम संस्करण-2006